



भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय

खानपुर कलां, सोनीपत, हरियाणा - 131305

Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya

Khanpur Kalan, Sonipat, Haryana-131305

प्रोफेसर एस. पी. बंसल
कुलपति
Professor S. P. Bansal
Vice-Chancellor



No. BPSMV/VC/.....

Dated.....

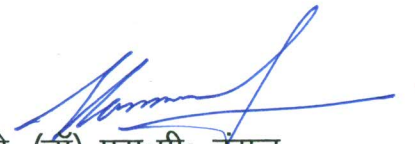
शुभ संदेश

प्राचीनकाल से ही मातृदेवो भव, पितृदेवो भव की अवधारणा पर चलने वाला हमारा भारतीय समाज अब भौतिकवाद एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर माता-पिता को वह सम्मान नहीं देता, जिसके वे अधिकारी हैं। बल्कि आज की युवा पीढ़ी तो वृद्ध माता-पिता को अवांक्षित बोझ समझने लगी है। ऐसे में श्री योग वेदान्त सेवा समिति द्वारा अथक प्रयास करके पिछले 10 वर्षों से निरन्तर 14 फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में उत्साहपूर्वक आयोजित कर भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने का जो सराहनीय कार्य किया जा रही है उसकी मैं दिल की गहराइयों से स्तुति करता हूँ।

वास्तव में परिवार समाज एवं राष्ट्र का केन्द्र बिन्दु होता है। यदि ऊर्जा का वह मूल स्रोत ही किसी कारणवश अपना सन्तुलन अपनी गरिमा खो बैठे तो वह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए बहुत बड़ी हानि सिद्ध होती है। जबकि जन-जीवन में ऊर्जा के अक्षय स्रोत रूप माता-पिता को सम्मान देने एवं परिवारिक वातावरण को सौहार्द्रपूर्ण बनाए रखने से न केवल राष्ट्र को सामाजिक-सांस्कृतिक-नैतिक सुदृढ़ता प्राप्त होती है बल्कि मानवता के विरुद्ध होने वाले क्रूर अपराधों में कमी भी आती है। भारतीय इतिहास गवाह है कि नचिकेता ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए ही 'अग्नि-विद्या' का ज्ञान प्राप्त किया। श्रीराम अपने पिता के आदेशों का पालन करके ही 'पुरुषोत्तम' बने और कृष्ण ने माता-पिता को कारावास से मुक्त कराने के लिए मामा कंस का वध तक कर दिया था।

आज की युवा पीढ़ी को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि साधारण सी लगने वाली कुमारी मानुषी छिल्लर ने अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर माता के गौरवमयी जीवन संघर्ष को आदरांजलि देकर ही अपनी असाधारण बुद्धि का प्रदर्शन किया और विश्वस्तर पर भारतवर्ष की सभ्यता एवं संस्कृति का मान बढ़ाया है।

मातृ-पितृ पूजन पुस्तक के प्रकाशन हेतु मैं पुनः श्री योग वेदान्त सेवा समिति के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। इस विश्व के प्रत्येक माता-पिता को उनका अपेक्षित सम्मान एवं स्थान प्राप्त हो तथा पृथ्वी पर मंगलतमय जीवन का स्वप्न साकार हो-परमपिता परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है!


प्रो० (डॉ०) एस०पी० बंसल